अपाल ना ना

स्वतंत्रमत - 14.07.07 बी.के. पाण्डे, ए.के. बख्शी, शैलेन्द्र मिश्रा हनुमान तिवारी, मेडम ... हमले की जांच की मांग की है।

'घुंघरू' में नृत्य की भावभंगिमाओं ने दर्शकों का मन मोहा

जबलपुर। संगीत -समाज जबलपुर के सहयोग से उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत अकादेमी भोपाल द्वारा आयोजित दो दिवसीय पांच शास्त्रीय नृत्यों के अभिनव समारोह घुंघरु ने जनमानस पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है।संस्कृति मंत्री अजय सिंह द्वारा उद्घाटित समारोह की पहली प्रस्तुति मुंबई से आई भरतनाट्यम की नृत्यांगना सुश्री मानसी कमलाकर सोनटक्के ने दी। आपने आदिताल एवं नाटे राग पर आधारित गणेश वंदना से नृत्य प्रारंभ किया। एक ताल एवं नाटे ताल पर आपने पुष्पांजलि की मनमोहक प्रस्तुति एवं तत्पश्चात राग व ताल मलिका में देवी महात्म्य से ली गई अष्टा भुंजगी महिषासुर मर्दनी पंक्तियों द्वारा मां दुर्गा की आठ भुजाओं को विविध शस्त्रों सहित सुंदर भावभगिमाओं द्वारा चित्रित किया। ताल मिश्रचापु एवं राग यमन कल्याण पर आधारित प्रस्तुति पदम में कृष्ण की बचपन की शरारतों एवं मां यशोदा के वात्सल्य का दोहरा अभिनय मानसी द्वारा किया गया। नृत्य के समापन के पूर्व कवि जयदेव द्वारा रचित गीत गोविंद की छटी अष्टपदी से ली गई पंक्ति सखी ये केरी मदन् मधुरम पर मिश्रचाप ताल व राग शुद्ध सारंग में निबद्ध अष्टपदी ने सभी का मन मोह लिया। ओडिसी नृत्य की अमूल्य बल्वंतराय, भुवनेश्वर द्वारा अनिर्वचनीय प्रस्तुति ने समस्त श्रोताओं का मन मोह लिया। मात्र 21 वर्ष की उम्र में अमूल्य ने नेत्र, भवे, गर्दन, कंधे, कमर, कूल्हे, घुटने व टखने के सुचारु व सौम्य संचालन में जो परिपक्वता दिखाई है उसने उनके प्रदर्शन को सर्वश्रेष्ठ साबित किया।राग संकररावरन एवं एक ताल में निबद्ध प्रस्तुति पल्लवी में नृत्य के कवितामयी विस्तार को देखकर दर्शक वाह वाह कर उठे। विशाखापटनम से पधारी सुश्री नीलिमा राजू ने कुचीपुडी नृत्य द्वारा कृष्ण के बाल सुलभ रूप व सौंदर्य का अत्यंत मनोहारी प्रदर्शन कर दर्शकों का दिल जीत लिया।

शिवाष्टक की प्रस्तुति में शिव की विभिन्न मुद्राओं का नेत्र व अंग संचालन द्वारा प्रदर्शन कर दर्शकों को मोह लिया। गोस्वामी तुलसीदास जी की सुप्रसिद्ध रचना श्रीराम चंद्र कृपालु भज मन हरण भव भय दारुणम की प्रत्येक पंक्ति की चार-पांच प्रकार से विभिन्न रसों, मुद्राओं में रोचक प्रस्तुति देकर कुचीपुडी नृत्य की विभिन्न शैलियों में पारंगत होने का परिचय दिया। घुंघरु के समापन में मणीपुरी नृत्य को देखकर दर्शकों में भारत के उत्तर पूर्व क्षेत्र के शांत सौम्य परिवेश का भाव जागृत हुआ। नेनी चूरी द्वारा कृष्ण का अपने साथियों के साथ मख्खन चुराने की बाल सुलभ शरारत का मनोहारी प्रदर्शन कु. बिम्बावती देवी ने किया। राधा के रूप का वर्णन कु. इंद्राणी पाल एवं रिखिया वसु ने मणीपुरी नृत्य शैली में देकर श्रृंगार रस के समारोह को सराबोर कर दिया।

कु. बिम्बावती एवं इंद्राणीपाल ने मानभंजन में पुनः श्रृंगार रस की प्रस्तुति दी, जिसमें कृष्ण के मान दंभ को राधा रूठकर भंग करती है और कृष्ण राधा को मनाते हैं। कु. बिम्बावती देवी, कु. इंद्राणीपाल एवं कु. रिखिया वासु ने रासमय पद संचालन, भावभगिमाओं नेत्र संचालन एवं मणीपुरी नृत्य के विशिष्ट परिधानों की अमिट छाप दर्शकों पर छोड़ी। भारतीय शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं यथा [illegible] ओडिसी, मणीपुरी नृत्यों के इस अभिनव आयोजन घुंघरू के संचालन [illegible] सचिव इंजी. संजय त्रिपाठी ने किया। समस्त आमंत्रित कलाकारों एवं दर्शकों का धन्यवाद देते हुए संगीत समाज के अध्यक्ष राजेन्द्र तिवारी ने उस्ताद अलाउद्दीन खां अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। उपाध्यक्ष डॉ. जितेन्द्र जामदार ने कार्यकारिणी सदस्यों यथा अनिल मांधे, भास्कर खांडकर, संजय त्रिपाठी, डॉ. विपिन ब्यौहार, विलास मंडपे, रवि परांजपे, प्रदीप रानाडे के प्रयासों को उत्साहजनक बताते हुए सभी को भविष्य के कार्यक्रमों की जानकारी दी।